



मनोज कुमार वर्मा की कविता

साहित्यिक विमर्श

हाँ मैं दलित हूँ

मेरे माथे पर नहीं लिखा है
लेकिन मेरा चेहरा बोलता है
बोलते हैं खुसुर फुसुर करते हुए
सैकड़ों मुंह धारी
पढ़ लेते हैं कागजात
पता लगा लेते हैं इधर उधर से
जब मालूम न पड़े तो
पूँछ लेते हैं
चमार हो
ठाकुर हो
पंडित हो
रुकता है
बुलवाने के लिए मेरे मुंह से मेरी जाति
क्या हैं आप...
उस हरामी की जुबान लगातार चलती रहती है
उसके दिमाग में अटक जाता है
उसके गले में थूँक रुक जाता है
जब तक जान न ले मेरी जात
तब तक उसे पड़ती रहती है लात
वह क्यों जानना चाहता है
उसकी बेटी के लिए
उसकी रिश्तेदारी में..किसी

न न मेरी उम्र बताती है मेरी शादी हो चुकी है
फिर
फिर
क्यों
तमाम गालियां मेरे पास आकर इंतजार मे है
मैं चुप हूँ कि
खामोशी की विरासत का वाहक माना गया
कि जिसे कमजोर समझा गया
कि दमन कर पिसा गया
जैसे सहन कर लेते हैं
हर अडवे भडवे के
आलतू-फालतू सवाल, जिज्ञासा को
चलो ठीक है
बस यही उदारता हमारी कमजोरी बताई जाती है
हम चुप होते हैं
जवाब देता हूँ
हां मैं दलित हूँ
चुप हो जाता हूँ
क्या मजाक कर रहे हैं
नहीं नहीं आप कोटे वाले नहीं हो सकते
कहता है मानसिक विकृति का शिकार
और ही ही ही करता है...
और सुकून मिलता है कि जान गया जाति मेरी
ढिंढोरा पीटने के लिए



सबसे पहले की खोज स्वलित हो जाती है...
अजीब सा लगता था
और भूल जाता था
अब भूल नहीं पाता हूं
भूलना नहीं चाहता हूं
जिसे हल्का सा भी कन्फ्यूजन हो
हो कहीं दिमाग की नली में अटका हुआ
जो आपको गटर में तब्दील कर रहा

उन सबसे कहना है, आँखों में आंख डालकर
हां, मैं दलित हूं..
क्या तुम्हें कह सकता हूं, भाई संबोधन से..
मेरे देश के नागरिक
वसुधैव कुटुम्बकम से ग्लोबल विलेज के हिमायती
मारी तो नहीं गई तुम्हारी मति...।

मनोज कुमार वर्मा

देव लॉज, कमरा न. 6,

छित्तपुर, बीएचयू, वाराणसी(यू. पी.)

मो. 9118203471

ईमेल- manoj02aug@gmail.com

